

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 1496

दिनांक 29 जुलाई, 2025

सरसों में स्केलरोटिनिया रॉट का प्रबंधन और इसके प्रसार को रोकना

1496. श्री चव्हाण रविन्द्र वसंतराव :

क्या कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या आईसीएआर-इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ रेपसीड मस्टर्ड रिसर्च को विभिन्न राज्यों में सरसों की प्रमुख खेती में स्केलरोटिनिया रॉट के प्रबंधन और प्रसार को रोकने में सफलता मिली है;
- (ख) यदि हाँ, तो तत्संबंधी व्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो पिछले पाँच वर्षों में किन विशिष्ट राज्यों में इसकी घटनाओं में वृद्धि देखी गई है और ऐसत उपज हानि कितनी हुई है;
- (ग) खुले क्षेत्र परीक्षणों और इसके व्यापक क्षेत्र प्रसार के लिए जिम्मेदार संबंधितों के विरुद्ध की गई कार्रवाई का व्यौरा क्या है; और
- (घ) विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के मटदेनजर, हमारे देश में आक्रामक कीटों को पनपने से रोकने के लिए संगरोध के अलावा और क्या उपाय किए गए हैं?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) : जी हां। विभिन्न राज्यों में प्रमुख सरसों उगाने वाले क्षेत्रों में स्केलरोटिनिया सङ्ग रोग को नियंत्रित करने के लिए रासायनिक, जैविक और पोषक तत्व प्रबंधन विकल्पों सहित एकीकृत कीट प्रबंधन पद्धतियों की अनुशंसा की जाती है।

(ख) : स्केलेरोटिनिया सङ्ग के बढ़ते मामलों वाले राज्यों में राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश शामिल हैं। इसके बढ़ते प्रकोप के लिए व्यापक रूप से अपनाई गई एकल फसलचक्र (मोनोक्रोपिंग) पद्धतियों और सिंचित परिस्थितियों के अन्तर्गत तोरिया-सरसों की खेती करना जैसे कारण शामिल हैं। तोरिया-सरसों में स्केलेरोटिनिया सङ्ग के कारण उपज में होने वाली हानि, एक विशिष्ट पौधा बढ़वार अवस्था में रोग के प्रकोप और संक्रमण पर निर्भर करती है। संक्रमित पौधों में औसत उपज हानि 50-100% तक होती है जोकि पौधे के संक्रमित होने की अवस्था पर निर्भर करती है।

(ग) : यह रोग भारत में पहली बार सन् 1915 में देखने में आया था। चूंकि, इस रोग का रोगाणु आक्रामक नहीं है, सरसों में खुले खेत में परीक्षण करने पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

(घ) : इस रोग को नियंत्रित करने के लिए मुख्य उपायों के रूप में एकीकृत रोग प्रबंधन उपायों को लोकप्रिय बनाना, जिनमें गहरी ग्रीष्मकालीन जुताई, 10 ग्राम/किग्रा बीज की दर से ट्राइकोडर्मा हार्जनम से बीजोपचार करना, बीज रोपण के 40-45 दिनों के बाद और 65-70 दिनों के बाद 0.05% की दर से प्रोपिकोनाजोल 25 EC का पर्णीय छिड़काव, उर्वरकों का संतुलित अनुप्रयोग करना और रोग के गंभीर विकास काल (कोहरे वाला मौसम) के दौरान सिंचाई करने से बचना शामिल है।
